International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(II), April - June, 2023, pp. 83-89

दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय संकल्पना

चेतन सिंह गुलेरिया*

सार

अंत्योदय का अर्थ है समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर और पिछड़े वर्गों का उदय अथवा विकास। इसे समाज के सबसे आखिरी व्यक्ति अथवा सबसे अभावग्रस्त व्यक्ति का उत्थान और विकास भी कह सकते हैं। आर्थिक योजनाओं और आर्थिक विकास का माप उन लोगों से नहीं किया जा सकता है जो आर्थिक सीढ़ी पर ऊपर उठे हैं, बल्कि उन लोगों से होगा जो सबसे नीचे हैं। गांधी जी ने देश के नीति–निर्माताओं से आह्वान किया था कि नीतियाँ बनाते समय वे विचार करें कि उस नीति से देश के गरीब व्यक्ति को क्या लाभ होगा। यदि वे संतुष्ट हों कि वह योजना देश के सबसे अभावग्रस्त व्यक्ति के विकास में लाभाकरी है तो ही उस योजना को लागू करें। विनोबा भावे और गांधी जी ने इसे 'सर्वोदय' कहा जबकि दीनदयाल उपाध्याय ने इसके लिए 'अंत्योदय' शब्द प्रयोग किया। दीनदयाल उपाध्याय मानते थे कि समष्टि जीवन का कोई भी अंगोपांग, समुदाय या व्यक्ति पीड़ित रहता है तो वह समग्र यानि विराट पुरुष को विकलांग करता है। इसलिए सांगोपांग समाज–जीवन की आवश्यक शर्त है 'अंत्योदय'। मनुष्य की एकात्मता तब आहत हो जाती है जब उसका कोई घटक समग्रता से पृथक पड़ जाता है। इसलिए समाज के योजकों को अंत्योदयी होना चाहिए। 'अंत्योदय' शब्द में संवेदना है, सहानुभूति है, प्रेरणा है, साधना है, प्रामाणिकता है, आत्मीयता है, कर्तव्यपरायणता है और लक्ष्य की स्पष्टता है। दीनदयाल जी अश्रुपूरित आंखों से आंसू पोंछने और मुरझाए चेहरों पर मुस्कराहट लौटाने को 'अंत्योदय' की पहली सीढ़ी मानते थे।

शब्दकोष: *अंत्योदय, वंचित, स्वावलंबी, कर्तव्यपरायणता, सहानुभूति, एकात्मता, अश्रुपूरित।*

प्रस्तावना

शोध उदेश्य

- दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय संकल्पना का अध्ययन करना।
- दीनदयाल उपाध्याय का सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन अंत्योदय पर आधारित का अध्ययन करना।

विषय

अंत्योदय' दीनदयाल जी के अन्तःकरण की आवाज थी। इसका प्रमुख कारण था उनके द्वारा बचपन से ही गरीबी और अभाव को झेलना। ढाई साल की आयू में पिता का साया उठ गया और सात साल की आयू में माता भी चल बसीं। माता–पिता की छत्रछाया से वंचित होकर बचपन से ही वे रिश्तेदारों के आश्रय में शिक्षा के

* शोधार्थी, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, धर्मशाला, काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश।

लिए भटकते रहे। नाना के पास गये तो दस साल की आयु में नाना का भी निधन हो गया। उसके बाद मामा के घर गये तो 15 साल की आयु में मामी का निधन हो गया। 18वें साल में छोटे भाई का मोतीझरा के कारण निधन हो गया। जब दसवीं पास की तो एकमात्र सहारा नानी भी चल बसीं। बाद में ममेरी बहन के पास रहने लगे तो एम.ए. की पढ़ाई करते हुए बहन का भी निधन हो गया और इस कारण एम.ए. फाइनल की परीक्षा नहीं दे सके। 25 वर्ष की आयू तक वे 11 स्थानों पर रहे और इस तमाम तरह के कष्ट झेले (शर्मा, 2015)। इसीलिए उन्होंने अपनी अथवा अपने परिवार की गरीबी मिटाने की बजाए पूरे देश की गरीबी मिटाने का प्रयास किया।

समाज के वंचित वर्ग को स्वावलंबी बनाने के लिए दीनदयाल उपाध्याय कितने सजग और गंभीर रहते थे इस संबंध में प्रख्यात स्वदेशी चिंतक, विचारक और भारतीय मजदूर संघ सहित करीब आधा दर्जन राष्ट्रीय संगठनों के संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी एक घटना सुनाया करते थे। एक बार दीनदयाल जी रेल से यात्रा कर रहे थे। अपने स्वभाव के अनुसार वे द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में ही यात्रा करते थे। जिस कोच में वे यात्रा कर रहे थे, उसमें एक बालक बूट पॉलिश की आवाज लगाते हुए आया। दीनदयाल जी के पास बैठे हुए एक सूट–बूट वाले बाबूजी ने जूतों पर पॉलिश कराने की इच्छा तो व्यक्त की, परन्तु बालक से पूछा कि क्या उसके पास पॉलिश के बाद जूता साफ करने के लिए कपड़ा है? बालक ने कहा, नहीं। यह सुनते ही उसने बूट पॉलिश कराने से इनकार कर दिया। उसी समय बिना एक पल गवांए दीनदयाल जी ने उस बालक को अपने पास बुलाया और अपने तौलिए का आधा हिस्सा फाड़कर देते हुए कहा "जाओ! अब पालिश कर दो"। और बालक ने उस व्यक्ति के जूतों पर पॉलिश कर दी। पॉलिश करने के बाद उस बालक ने कृतज्ञ भाव से दीनदयाल जी की ओर देखा और उस व्यक्ति से पैसे लेकर जाने लगा तो दीनदयाल जी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, बेटा, 'पॉलिश के लिए हमेशा कपड़ा अपने साथ रखा करो, अन्यथा आज तुम्हारा नुकसान हो गया होता"। सबसे निचले तबके के लिए उनकी संवेदना पर एक ऐसी ही एक घटना दीनदयाल जी के अनन्य सहयोगी रहे स्व. जगदीश प्रसाद माथुर सुनाया करते थे। देश के सबसे बड़े गैर–कांग्रेसी राजनीतिक दल, भारतीय जनसंघ, के महामंत्री रहते हुए दीनदयाल जी उस समय लखनऊ में थे। अचानक वे कार्यालय से बाहर गये और थोड़ी ही देर में बाल कटवाकर (हजामत बनवाकर) आ गये। कुछ कार्यकर्ताओं ने पूछा कि इतनी जल्दी हजामत कहां बनवा ली? दीनदयाल जी कहने लगे, 'गुम्मा सैलून में'। किसी की समझ में नहीं आया कि यह 'गुम्मा सैलून' उस इलाके में कहां है? बहुत पूछने पर कहने लगे, "टूटी ईंट के टुकड़े (गुम्मा) पर सड़क के किनारे बैठे नाई से हजामत बनवाकर आया हूं।" लोगों ने कारण पूछा तो कहने लगे, "मेरे पास समय नहीं था और नाई के पास कोई ग्राहक नहीं था। मेरे कारण उसकी कुछ आमदनी हो गयी।" इन दोनों घटनाओं से पता चलता है कि समाज के अभावग्रस्त वर्ग के उत्थान हेतु दीनदयाल जी कितने तत्पर रहते थे। उनका मानना था कि भारत का संतुलित विकास तब तक संभव नहीं है, जब तक समाज का प्रत्येक वर्ग समान रूप से विकास न करे। वे चाहते थे कि कम से कम स्वतंत्रता के पश्चात् प्रत्येक सरकारी योजना का केन्द्र बिन्दु समाज का वह अंतिम व्यक्ति रहना चाहिए, जो विकास की किरण से अभी तक वंचित है।

दीनदयाल उपाध्याय आर्थिक उन्नत्ति के बारे में बात करते हुए कहते हैं "यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास योजनाओं द्वारा उत्पन्न धन किसी विशेष वर्ग के हाथों में न पहुँच जाये, अपितु वंचित वर्ग तक भी हमेशा पहुँचता रहे। यह तभी संभव है, जब आर्थिक विकास के साथ नैतिक व चारित्रिक विकास भी होता रहे। तभी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का हमारा स्वप्न साकार होगा (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–12)।

दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार आर्थिक नीतियों की सफलता और आर्थिक प्रगति का आंकलन कुलीन या उच्च तबके से नहीं, बल्कि उनसे होगा, जो समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर हैं। "इस देश में करोड़ों ऐसे लोग हैं, जो अभी भी अपने मुलभूत अधिकारों से वंचित हैं। सरकार की नीतियों और योजनाओं के निर्धारण में इन करोंड़ों लोगों को कोई स्थान नहीं मिलता और न ही प्रशासन की ऐसी कोई मंशा या इच्छा दिखाई देती है, परन्तु इन्हें प्रगति के पथ पर रोड़ा समझा जाता है, तथापि हमारे लिए ये दीन–हीन और निरक्षर ईश्वर का

स्वरूप हैं और पूजनीय हैं। इनकी उपासना हमारा धर्म है। देश तब तक उर्जा और स्फूर्ति के साथ आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक कि हम सुदूर गाँव–देहात और खेत और खलिहान तक आशा विश्वास का संदेश पहुँचाने में सफल न हों जाएँ, उन स्थानों पर जहाँ समय अभी भी वहीं रुका हुआ है। जहाँ माता–पिता अपनी संतानों को उनके भविष्य को कोई दिशा देने में असमर्थ है। हमारे विश्वास, हमारी प्रार्थना और समर्पण का उद्देश्य और हमारी सफलता और उपलब्धियों के आकलन के केंद्र में वह होना चाहिए (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–12पृष्ठ–260) । दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय को ऐसे समझाते हैं। माना सर्दियों में कोई भला आदमी 12 कम्बल बांटने निकला। वह एक जगह गया तो देखा कि झोपड़ी में एक आदमी दो कंबल ओढ़कर और दो बिछाकर बैठा है। आगे बढ़ाए तो एक आदमी और मिला। वह झोपड़ी में एक कम्बल ओढ़ और एक बिछाकर बैठा था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर तीसरा आदमी मिला। वह पेड़ के नीचे एक कंबल ओढ़कर और एक बिछाकर बैठा था। आगे एक चौथा आदमी खुले में बैठा था। उसके पास न ओढ़ने को कुछ था और न बिछाने को। उस भले आदमी ने देखा कि चारों ही सर्दी से कांप रहे हैं। यहां दो विचार मन में आते हैं। वह चारों को तीन–तीन कंबल देकर घर जा सकता था क्योंकि चारों ही परेशान थे पर उसने सबसे पहले चौथे व्यक्ति को छह कंबल दिये। फिर तीसरे को तीन दूसरे को दो और अंत में पहले को एक। बस यही है अंत्योदय। अर्थात सबसे पहले और सबसे अधिक सहायता उसे मिले, जिसकी जरूरत सबसे अधिक है। जहां सौ वाट का बल्ब जल रहा हो वहां 25 वाट का एक और बल्ब लगा देने से कुछ लाभ नहीं होगा पर जहां घुप अंधेरा है वहां 25 वाट के बल्ब से ही बाहर आ जाएगी।

नियोजन के अर्थ व परिभाषा को लेकर लम्बे समय से बहस व विवाद चल रहा था। उस पर दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि योजना एवं नियोजन का अलग–अलग अर्थ व परिभाषा होने के कारण एक भ्रमपूर्ण स्थिति का निर्माण हो गया है। दीनदयाल जी की यह आशंका कुछ हद तक सही थी। योजना विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की जनता बहुत गरीब, बहुत अज्ञानी और पुरानी व्यवहार–परम्पराओं से घिरी होने के कारण उसकी विकास योजनाओं का निर्माण व क्रियान्वयन कुछ समय तक ऊपर से ही किया जाना चाहिए। दीनदयाल जी इससे सहमत नहीं थे। क्योंकि यह देश की जनता की क्षमता में विश्वास की कमी को दर्शाता है, जिसे अच्छा नहीं कहा जा सकता। वो तो नीचे के स्तर से जनभागीदारी और साझेदारी से योजना बनाने के पक्ष में थे। आर्थिक नियोजन की दिशा के बारे में गंभीर सवाल उठाते हुए दीनदयाल जी ने कहा, "हमे यह निश्चित करना है कि आर्थिक योजना सामाजिक योजना और राजनैतिक योजना की सहायक हो या सामाजिक, राजनैतिक मूल्य भी आर्थिक मूल्य से संचालित हो। क्या हम आर्थिक कल्याण के आगे अपने लोकतान्त्रिक, मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों की बलि चढ़ा दे (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–6 भूमिका)।

दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि जब तक एक–एक व्यक्ति की विशिष्टता व विविधता को ध्यान में रखकर उसके विकास की चिंता नही करेंगे, तब तक मानवता की सच्ची सेवा नहीं होगी। इसके लिए विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था चाहिए. स्वयंसेवी क्षेत्र को खड़ा करना होगा। यह क्षेत्र जितना खड़ा होगा, उतना ही मनुष्य आगे बढ़ सकेगा, मनुष्यता का विकास हो सकेगा, एक मनुष्य दूसरे का विचार कर सकेगा, हरेक की व्यक्तिगत आवश्कताओं व विशेषताओं का विचार करके उसे काम देने पर उसके गुणों का विकास हो सकता है। यह विकेन्द्रित व्यवस्था भारत ही संसार को दे सकता है। हम नये सिरे से आर्थिक निर्माण शुरू कर सकते हैं (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–7 पृष्ठ–43)।

दीनदयाल जी बताते हैं कि स्वामी विवेकानंद से पश्चिम जगत के लोगों ने पूछा कि स्वामीजी आपका देश तो विचारों की दृष्टि और अध्यात्मिकता के ज्ञान से अंत्यंत प्रगति प्राप्त किए हुए है, परन्तु फिर उस देश में इतनी गरीबी क्यों है? वह इतना पिछड़ा और गुलाम क्यों है? स्वामी जी इस प्रश्न का कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सके। स्वामी जी ने प्रश्न पर बार–बार विचार किया और फिर विचार करने के पश्चात उनको यह स्पष्ट लगा कि हमारा देश इतने उच्च गुणों के होते हुए भी पिछड़ा हुआ इसलिए है कि क्योंकि उसके पास सामर्थ्य नहीं है, शक्ति नहीं है। इसीलिए उन्होंने सबसे पहले सामर्थ्य उत्पन करने का विचार किया। जब तक हम

हिन्दुस्थान को सामर्थ्यवान नहीं बनाते, भौतिक दृष्टि से सबल नहीं होते, तब तक हम संसार को इस आधार पर खड़ा नहीं कर सकते। अपने उन उच्च सिद्धांतों की कीमत तभी होगी, जब हमें वह सामर्थ्य प्राप्त होगी, जिससे हम खड़े होकर ऊँचे स्वर में कह सकेंगे कि हमारे पास जीवनयापन के ऐसे उच्च आदर्श व सिद्धांत हैं। इसलिए समाज के अंतिम व्यक्ति को जगाकर उसे आत्म स्वाभिमानी बनाना होगा, तभी हम संसार की सेवा कर पाएंगे (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–7 पृष्ठ–127)।

दीनदयाल जी कहते हैं कि स्वधर्मानुसार प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह कर सके इसके लिए यह आवश्यक है कि किसी को भी 'अधिक लाभप्रद' नौकरी न दी जाये, सभी को काम यही हमारी आर्थिक रचना का आधार होना चाहिए। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हम विदेशी औद्योगिकीकरण के तरीकों का अन्धानुकरण नहीं करेंगे, छोटी मशीनों द्वारा संचालित कुटीर उद्योग ही हमारे लिए अनुकूल हो सकते हैं (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–8 पृष्ठ–14)। जम्मू–कश्मीर के नागरिकों की चिंता करते हुए कहते है कि जब तक अनुच्छेद 370 रहेगा तब तक राज्य को दिया विशेष दर्जा केवल राज्य सरकार को ही विशेषाधिकार देता है, राज्य के लोगों के लिए नहीं। इस भेदभावपूर्ण व्यवहार को देश–विरोधी शक्तियां भारत के विरुद्ध प्रयोग करती हैं। इसलिए यह जरुरी है की राज्य के नागरिकों को वो सभी अधिकार मिलें, जो अन्य नागरिकों को मिल रहे हैं, भेदभाव समाप्त किया जाए. (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–8 पृष्ठ–60)।

धर्मराज युधिष्ठिर का उदाहरण देते हुए दीनदयाल उपाध्याय कहते हैं कि उन्होंने अपना ही नहीं, दूसरों का भी विचार किया। जब यक्ष ने उनके सभी भाईयों में से किसी एक को पुनजीवित करने के लिए वरदान मांगने को कहा तो उस समय धर्मराज ने नकुल व सहदेव में से किसी एक को जीवित करने के लिए कहा। तब यक्ष ने आश्चर्य से कहा कि आपके पास महाबलशाली भीम और धनुर्धर अर्जुन हैं, ऐसे में नकुल या सहदेव को जीवित करने का क्या अर्थ है? तब धर्मराज ने कहा हमारी दो माताएं है कुंती और माद्री। सौभाग्य से मैं कुंती का एक पुत्र जीवित हूँ, माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहे इसलिए तुम नकुल या सहदेव में से किसी एक को जीवित कर दो। उन्होंने यहाँ पर यह विचार नहीं किया कि अर्जुन धनुर्धारी है, भीम बलशाली योद्धा है, परन्तु उन्होंने केवल धर्म व समाज का विचार किया। यक्ष ने उनके चारों भाईयों को पुनःजीवित कर दिया (दीनदयाल उपध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–8 पृष्ठ–229)।

दीनदयाल जी कहते हैं कि मनुष्य जो भी कर्म करता हैं वो सब समाज के लिए है। श्रम से मूल्य का निर्धारण नहीं होता, अपितु योग्यता के आधार होता है। दुनिया की दृष्टि में मूल्य बदलता रहता है, परन्तु वास्तव में श्रम के मूल्य चुकाने की कोई सीमा नहीं है, अध्यापक जो शिक्षा देता है, उसका मूल्य रुपए में नहीं चुकाया जा सकता। किसी डॉक्टर ने आपको मृत्यु से बचा लिया हो तो उसका आप क्या मूल्य लगा सकते हो? इस प्रकार मनुष्य का काम और उसके बदले उसे जो मिलता है, उसका कोई मेल नहीं। कर्म का मूल्य चुकाना असम्भव है। इसीलिये हमारे यहाँ पहले सब काम सेवा कार्य के नाते ही किये जाते थे। रूपए–पैसे में इनका कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता था। सेवा करना ही हमारा धर्म है, शेष सब चिंता समष्टि पर डाल देनी चाहिए (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–11 पृष्ठ–200)।

दीनदयाल जी महिलाओं की सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक अयोग्यताओं को दूर करने के लिए विशेष प्रयास की बात करते हैं, ताकि वे घर, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का ठीक से निर्वहन कर सके। जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर मिलें, परदा प्रथा, दहेज, बाल–विवाह, विषम विवाह आदि कुरीतिओं को समाप्त करने के लिए सुधारवादी कार्यक्रम अपनाने होंगे। मातृत्व की प्रतिष्ठा भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा है, मातृ–कल्याण के कार्यक्रम सामाजिक सुरक्षा के महवपूर्ण अंग होने चाहिए, वेतन और भत्ते में स्त्री और पुरुष दोनों के सामान स्तर रखे जाएं (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–11 पृष्ठ–240)।

दीनदयाल जी पूर्ण रोजगार के हिमायती थे। वे कहते थे कि प्रत्येक समर्थ और स्वस्थ व्यक्ति को जीविकोपार्जन की व्यवस्था करना आर्थिक नियोजन व औद्यौगिक निति का लक्ष्य होना चाहिए। बेकारी को दूर करने के लिए रोजगार के नये अवसरों के निर्माण के साथ अर्ध–रोजगार वालों की उत्पादकता और आय बढ़ाने

की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, बढ़ी हुई क्रयशक्ति से वे दूसरों को काम दे सकेंगे। काम न मिलने की अवस्था में जीवनयापन के लिए बेकारी भत्ते की व्यवस्था होनी चाहिए (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–11 पृष्ठ–260)।

दीनदयाल जी आर्थिक उन्नत्ति के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि विकास योजनाओं द्वारा उत्पन्न धन किसी विशेष वर्ग के हाथों में न पहुँच जाए, अपितु वंचित वर्ग तक भी हमेशा पहुँचता रहे। यह तभी संभव है, जब आर्थिक विकास के साथ नैतिक व चारित्रिक विकास भी होता रहे। तभी समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का हमारा स्वप्न साकार होगा (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–12)।

दीनदयाल जी आर्थिक नीतियों की सफलता और आर्थिक प्रगति का आकलन कुलीन या उच्च तबके से नहीं बल्कि उनसे होगा, जो समाज की सबसे निचली सीढ़ी पर हैं। इस देश में करोड़ों ऐसे लोग हैं, जो अभी भी अपने मुलभुत अधिकारों से वंचित हैं, सरकार की नीतियों और योजनाओं के निर्धारण में इन करोंड़ों लोगों को कोई स्थान नहीं मिलता और न ही प्रशासन की ऐसी कोई मंशा या इच्छा दिखाई देती है, परन्तु इन्हें प्रगति के पथ पर रोड़ा समझा जाता है, तथापि हमारे लिए ये दीन–हीन और निरक्षर ईश्वर का स्वरूप हैं और पूजनीय हैं। इनकी उपासना हमारा धर्म है. देश तब तक उर्जा और स्फूर्ति के साथ आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक कि हम सुदूर गाँव–देहात और खेत और खलिहान तक आशा विश्वास का सन्देश पहुँचाने में सफल न हों जाएँ। उन स्थानों पर जहाँ समय अभी भी वहीं रुका हुआ है। जहाँ माता–पिता अपनी संतानों को उनके भविष्य को कोई दिशा देने में असमर्थ हैं। हमारे विश्वास हमारी प्रार्थना और समर्पण का उद्देश्य और हमारी सफलता और उपलब्धियों के आकलन केंद्र में वह होना चाहिए (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–12पृष्ठ–260)।

दीनदयाल जी मलिन और झुग्गीवासियों की समस्या पर कहते हैं कि मलिन बस्तियों के हटाने से नहीं बल्कि उनके पुनर्वास से सम्बंधित है, यदि आप एक जगह से मलिन बस्ती के निवासियों को हटाते हैं, तो आप सिर्फ एक और मलिन बस्ती तैयार करते हैं। उन्होंने कहा कि मलिन बस्तियों में निश्चित रूप से सुधार किया जाना चाहिए और नागरिक सुविधा दी जानी चाहिए, इस बस्तिओं में मजदूरों के लिए बहुमंजिला इमारतों के बारे में बिना प्रतीक्षा किये सोचा जाना चाहिए, और इन लोगों का जीवन स्तर उठाने के हर संभव प्रयास होने चाहिए (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–12 पृष्ठ–264)। पूर्व केंद्रीय मंत्री और उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल रहे श्री राम नाइक दीनदयाल जी से जुड़ा एक मार्मिक प्रसंग सुनाते हैं। मुंबई महानगर कामगारों से भरपूर रहता है, यहाँ की आवासीय समस्या बहुत पुरानी है। मजदूरों को जहाँ जगह मिली, वहीँ रेन बसेरा, टाट की छत, लकड़ी या दफ्ती का घर बना लिया। झोपड़पट्टी से आबाद यहाँ एक नए तरीके का शहर था, उसे 'धारावी' भी कहा गया। झोंपड़पट्टियाँ गैर क़ानूनी होती हैं, लेकिन इनमें रहने वाले मजदूर कामगार देश के विकास के जीवंत देवता हैं। सरकारें अभियान चलाकर झोंपड़ पट्टियों को उजाड़ देती थी, कामगारों के रहने की समस्या विकराल थी, मुझे इस मानवीय समस्या ने झकझोर दिया, हम कार्यकर्ता के पक्ष में खड़े हो गये, हम लोगों ने 'झोंपड़पट्टी जनता परिषद् मुबई' नाम का संगठन खड़ा किया गैर क़ानूनी बस्तिओं के पक्ष में खड़े हो गए। कुछ लोग हमारे आलोचक भी थे। दीनदयाल जी उन्हीं दिनों मुम्बई आए। हमने अपना विषय रखा, उन्होंने अपने परिवार की दादी की मार्मिक कहानी सुनाई। युवा पुत्र चिड़िया द्वारा लगाए गये घोंसले को उजाड़ने जा रहा था। दादी ने पूछा 'यह घोंसला बनाने में चिड़िया को कितना समय लगा होगा? 'युवक ने कहा, कम से कम दो–तीन माह'। दादी ने कहा कि 'इसने तिनका–तिनका जोड़कर अपना घर बनाया है, तुमने शुरू में ही इसे क्यूँ नहीं रोका? अब घर उजाड़ना और बेघर करना कहाँ का न्याय है? पंडित जी ने कथा सुनते हुए कहा 'सबको घर चाहिए. बेघर करना उचित नहीं, मैं मनुष्य हूँ, सभी मनुष्यों को घर चाहिए। ये पक्षी हैं, पशु–पक्षी, कीट–पतंगे को भी आश्रय और आवास चाहिए। उन्होंने हमसे कहा कि तुम 'झोंपड़पट्टी जनता परिषद्' के माध्यम से सही काम कर रहे हो, परिषद् का घोष वाक्य था, 'मैं भी मनुष्य हूँ, मुझे घर चाहिए' (दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खंड–13 भूमिका)।

निष्कर्ष

दीनदयाल जी कहते हैं कि किसी भी देश के ज्ञान का यदि माप करना है तो ज्ञान के बारे में जैसे राजा भोज के बारे में कहते हैं कि भोज के राज्य में कोई भी अज्ञानी नहीं था, वहां सीधा–साधा व्यक्ति भी, रास्ते चलने वाला व्यक्ति भी कविता कर सकता था। किसी भी देश के ज्ञान और विज्ञान का, प्रगति का, सबका जो नाप है, वह इस पर है, जो कमजोर–से–कमजोर आदमी है, वह कितना ज्ञानी है। इसके हिसाब से नाप होता है, तो वैसे ही राष्ट्र की प्रगति, सुख, राष्ट्र की समृद्धि का मापदंड जब होगा, तब वह कमजोर से कमजोर का ही होगा और कमजोर से कमजोर के लिए ही यह सब चीजे उपलब्ध होंगी। वे उपलब्ध तभी होंगी जब संपूर्ण राष्ट्र के पास होंगी। उसके पास न होकर यदि ये दो–चार व्यक्तियों के पास होगी तो उससे कभी भी काम नहीं चलेगा। राष्ट्र का जब तक विचार नहीं होगा, तब तक समृद्धि नहीं होगी और राष्ट्र का विचार न करके हम अपना ही विचार लेकर चलेंगे तो जैसी आपाधापी आज चल रही है वैसी होगी, इसीलिए समाज के अंतिम व्यक्ति का विचार ही सर्वश्रेष्ठ है। दीनदयाल जी समाज के सुख की बात करते हुए कहते है कि एक बार में गाड़ी में बैठा हुआ था, भोजन कर रहा था. भोजन करते–करते क्या हुआ– एक कंकाल– सा आदमी आया सामने से–भीख मांगने वाला,और वह अपना ऐसा वेश बनाकर बिलकुल सामने आकर खड़ा हो गया हो और मांगने लगा, मैं भोजन कर रहा था, मेरे पास सब चीज थी, किन्तु वह जिस वेश में आकर खड़ा था, भूखा आकर खड़ा है, मैं कैसे खाता रहता? नतीजा यह हुआ की सबकुछ होने के बाद भी मन को सुख नहीं था, उसमें से रोटी निकाल कर जब तक उसको दी नहीं, तब तक मन को संतोष नहीं हुआ। वह भी शायद इसीलिए आया था कि चलो ये देंगे। इस तरह यदि दूसरा दुखी है, हम अपने को सोच ले कि हम सुखी हैं तो सुखी नहीं होते। मन का सुख सबके साथ जुड़ा हुआ है, इसी प्रकार पूरे समाज के साथ यह सुख और दुःख का रिश्ता जुड़ा हुआ है, पूरा समाज जब तक सुखी नहीं होगा तब तक हम भी सुखी नहीं हो सकते।

दीनदयाल जी स्वावलंबन के बारे में बात करते हुए कहते है कि बहुत बार लोग कहते हैं, हम स्वाबलंबी बनेंगे। इसका अर्थ है, क्या हम दुनिया से आंख बंद कर लेंगे? स्वाबलंबन का अर्थ यह नहीं होता कि हम एकान्तिक बन जाएँगे या हम अपने दबड़े के अन्दर बैठे रहेंगे। ऐसा नहीं रहता। जो देश स्वाबलंबी है, वे दुनिया के साथ सम्बंध नहीं रखते, ऐसी बात नहीं, पर स्वाबलंबी का अर्थ इतना ही कि हम अपने परों पर खड़े होंगे। अपने आप करेंगे, यदि हमें किसी की मदद लेनी होगी, हम उसके साथ समानता का व्यवहार करंगे। दीनदयाल जी कहते है कि श्रीराम ने समाज हित के लिए सब प्रकार के निजी सुखों को तिलांजली दी। गद्दी पर बैठे तो भी उसी आधार पर कार्य किया। इसी कारण हम रामराज्य को आज भी याद करते हैं, राम को अपने भगवान् का अवतार भी माना है, इसका कारण यही है कि राम ने अपना व्यक्तिव समाज में विसर्जित कर दिया था। जब हम अपने को समाज में विसर्जित कर देते है, तब समाज के गुण धर्म हमारे जीवन में घुल जाते हैं। समाज का शिष्टाचार जब हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाता है, समाज की ज्ञान परम्परा, धरोहर, थाती सबकुछ जब हम अपने में अंतर्भूत कर लेते हैं और जब हमारे जीवन में समाज के विकास की, उसे समुनन्त करने की भावना आ जाती है, तभी हमारे व्यक्तित्व का विकास हुआ है, ऐसा समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त विकास का और कोई अर्थ नहीं। विकास का अर्थ है समाज जीवन के साथ एकात्म हो जाना। यही दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की संकल्पना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–12 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
2. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–12 पृष्ठ–264 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
3. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–13 भूमिका नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

4. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–14 पृष्ठ–114,158 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

5. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–14 पृष्ठ–55 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

6. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड 15 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

7. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–11 पृष्ठ–260,200 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

8. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–8 पृष्ठ–229 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

9. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–7 पृष्ठ–127 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

10. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–6 भूमिका नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

11. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–12पृष्ठ–260 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

12. दीनदयाल वांग्मय. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय. खंड–12 नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.

13. शर्मा, एम. सी. (2015). आधुनिक भारत के निर्माताः दीनदयाल उपाध्याय. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.

❖◆❖